अमेरिका में पोलियो: पहले डर, फिर जीत

लीज़ा ए. स्वेनास्की डि हरेरा

अमेरिका में ज़्यादातर बच्चों के लिए गर्मी के मौसम का मतलब है स्विमिंग पूल में छपछपाते या रेत के बाड़ों में रेत के किले बनाते, मौज-मस्ती में दिन बिताना। लेकिन 1950 के दशक में बच्चों और वयस्कों पर अचानक टूट पड़ने वाले पोलियो से आतंकित माता-पिता बच्चों को स्विमिंग पूल और रेत के बाड़ों से दूर ही रखने का प्रयास करते थे।

सेंटर फॉर डिज़ीज़ कंट्रोल एंड प्रिवेंशन के पूर्व निदेशक डॉ. जेफ्री कॉप्लान को बचपन में अपने घर की खिड़की से दो बच्चों की मां अपनी पड़ोसिन को कार में डालकर अस्पताल ले जाए जाते देखना याद है- वह दो हफ़्ते बाद घर लौटी तो व्हील चेयर पर। उन दिनों अमेरिका में हर साल 20,000 लोग पोलियो की चपेट में आते थे। हर परिवार अपने यहां ऐसी घटना घटने की आशंका से सहमा रहता था।

पोलियो के शुरुआती लक्षण थकान और बुखार हैं, इसलिए माता-पिता समझ ही नहीं पाते थे कि बच्चे को फ़्लू है या पोलियो। अतिरिक्त सावधानी बरतते हुए लोग बुखार होते ही रोगी को अस्पताल ले जाते।

कुछ अस्पतालों में रोगियों की लम्बी कतारें लगतीं और लोग आपात चिकित्सा कक्षों में जाने का प्रयास करते। डॉक्टर लोग कारों में मौजूद रोगियों के पास जाकर वहीं उनकी जांच करते। अस्पताल में भर्ती होते ही रोगी की रीढ़ की हड्डी से द्रव निकाल कर जांच की जाती, हाथ-पैरों की शल्य चिकित्सा होती और उन्हें पट्टों में बांधा जाता। अलग वार्डों में पड़े बच्चों से उनके माता-पिता भी नहीं मिल सकते थे। कुछ रोगियों के शरीर तो इस हद तक बेजान हो जाते थे कि वे सांस तक नहीं ले पाते थे, और महीनों, कभी-कभी तो सालों आयरन लंग कहे जाने वाले वेंटिलेटर के सहारे पड़े रहते थे, बस उनका सिर ही बाहर दिखता था। इस साल फरवरी 1950 में पोलियो की चपेट में आई और अब भी आयरन लंग पर निर्भर एक अमेरिकी स्त्री ने अपना साठवां जन्मदिन मनाया।

लोग घबराए हुए तो थे लेकिन वे एकजुट भी हुए। बचपन में पोलियो का शिकार हुए अमेरिकी राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूज़वेल्ट ने 12 साल तक व्हीलचेयर से या छड़ी के सहारे चलते देश का राजकाज चलाया। उन्होंने पोलियो पर शोध और पोलियो के शिकारों की सहायता के लिए धन जुटाने के उद्देश्य से एक राष्ट्रीय न्यास द मार्च ऑफ़ डाइम्स (www.marchofdimes.com) की स्थापना की। यह संस्था आज भी अपंग बच्चों के लिए काम करती है। 1950 के दशक में द मार्च ऑफ़ डाइम्स के स्वंयसेवक घर-घर जाकर चंदा जमा करते थे। मांएं सड़कों पर जुलूस निकालती थीं और वैज्ञानिक एक रोग प्रतिरोधी वैक्सीन की खोज में जुटे थे।

इन्हीं में से एक थे पेंसिल्वानिया में यूनिवर्सिटी ऑफ़ पिट्सबर्ग के डॉ. जोनास साक। नोबेल पुरस्कार विजेता जॉन एफ. एंडर्स, टॉमस एच. वैलर और फ्रेडरिक सी. रॉबिन्स पोलियोमायलाइटिस विषाणु के विभिन्न प्रकार के ऊतक संवर्धनों में पनप सकने की सामर्थ्य की खोज कर चुके थे। इसी खोज के आधार पर साक और उनके सहयोगियों ने पोलियो के विरुद्ध प्रभावी, सुरक्षित और इंजेक्शन से शरीर में पहुंचाई जा सकने वाली वैक्सीन तैयार की। 1952 से 1954 के बीच प्रयोगात्मक परीक्षणों में इस वैक्सीन के सुरक्षा पहलू की जांच के लिए यह पिट्सबर्ग के 15,000 लोगों को दी गई जिनमें बड़ी संख्या बच्चों की थी। फिर यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिशिगन के डॉ. टॉमस फ्रांसिस, जूनियर और मार्च ऑफ़ डाइम्स ने अमेरिकी इतिहास में सबसे लम्बे फ़ील्ड परीक्षण किए जिनमें 18 लाख बच्चों को पोलियो के इंजेक्शन लगाए गए। इस परीक्षण में पहली बार ''डबल-ब्लाइंड'' कही जाने वाली उस मानक प्रक्रिया का प्रयोग हुआ जिसमें न तो रोगी ही और न दवा देने वाले चिकित्सक ही जानते थे कि रोगी को वैक्सीन दी जा रही है या मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालकर इलाज करने के लिए प्लेसीबो।

अप्रैल 1955 में साक की वैक्सीन को सफल घोषित कर दिया गया। महीने भर के अंदर ही अमेरिका में पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों को टीके लगाए जाने लगे। साक के अनुसंधान से संसारभर के सामने स्पष्ट हो गया कि अपेक्षाकृत कम साधन संपन्न प्रयोगशालाओं में विकसित वैज्ञानिक हल मानवीय स्वास्थ्य की जटिल समस्याओं को हल करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

लेकिन कुछ अर्से बाद खराब हो चुकी वैक्सीन के प्रयोग के कारण 260 लोग पोलियों के शिकार हो गए और 10 लोगों की मृत्यु हो गई। तीन सप्ताह के लिए टीके लगाने का काम रोक दिया गया जिससे अमेरिकी इतिहास में पोलियो की सबसे बड़ी महामारी फैली।

सेंटर फॉर डिज़ीज़ कंट्रोल एंड प्रिवेंशन में काम कर चुके डॉ. नील नैथनसन ने उस दौर की याद करते हुए बताया, ''लोग पूछने लगे कि अगर यह उत्पाद इतना असुरक्षित है तो हम यह कैसे मान लें कि बाकी टीके सुरक्षित हैं।'' सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा की विश्वसनीयता भी दांव पर थी।

सेंटर फॉर डिज़ीज़ कंट्रोल एंड प्रिवेंशन के मुख्य चिकित्सक डॉ. अलेक्ज़ैंडर डी. लैंगम्यूर ने तुरंत पोलियो सर्वीलैंस यूनिट की स्थापना करके देशभर से पोलियो के रोगयों से संबंधित आंकड़े जमा करने शुरू कर दिए। जनता प्रक्रिया के बारे में पूरी सूचना चाहती थी। मामला इतना गंभीर था कि द न्यू यॉर्क टाइम्स ने एक महीने तक सेंटर फॉर डिज़ीज़ कंट्रोल एंड प्रिवेंशन की हर रिपोर्ट पहले पृष्ठ पर छापी।

डॉ. नैथनसन याद करते हैं, ''जल्दी ही साफ़ समझ में आने लगा कि पोलियो का प्रकोप दो राज्यों कैलिफ़ोर्निया और आइडाहो में ही है। आगे छानबीन से यह भी पता चल गया कि खराब वैक्सीन एक ही उत्पादक कटर लैब से आई थी।'' इसके बाद अन्य उत्पादकों द्वारा उत्पादित टीकों पर से प्रतिबंध उठा लिया गया।

तेज़ी से जांच और कार्रवाई के परिणामस्वरूप जनता का विश्वास टीकाकरण कार्यक्रम और यू.एस.पब्लिक हेल्थ सर्विस में फिर से जम गया। 1960 में पोलियो के कुल 2,525 मामले सामने आए। 1965 में कुल 61 और 1979 में शून्य। लेकिन आज भी अमेरिकी बच्चों को पोलियो वैक्सीन दी जाती है क्योंकि जब तक दुनिया में कहीं भी पोलियो विषाणु मौजूद है वह किसी को भी चपेटे में ले सकता है।

पोलियो के जबर्दस्त प्रकोप ने राष्ट्रीय स्तर पर रोगों की निगरानी की क्षमता की आवश्यकता को रेखांकित किया। आज सेंटर फॉर डिज़ीज़ कंट्रोल एंड प्रिवेंशन एड्स, सीसा विषाक्तता, तम्बाकू का उपयोग, कामकाज से जुड़ी चोटों और हानियों , जन्मजात दोषों और कैंसर जैसे सैकड़ों रोगों और दोषों की निगरानी करता है।

इस घटना के कारण संघीय सरकार ने वैक्सीन के उत्पादन और उत्पादों की सुरक्षा के परीक्षण के लिए और कड़े मानक स्थापित किए- अब किसी वैक्सीन को लाइसेंस मिलने से पहले उत्पादकों को उत्पादन का पूरा इतिहास और उत्पाद सुरक्षा परीक्षण के निरंतर सकारात्मक परिणाम उपलब्ध करवाने होते हैं।

पोलियो का नया संकट आखिर क्यों सामने आया? विडम्बना ही है कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रगति और अमेरिका में मध्य वर्ग की वृद्धि ने पोलियो को महामारी के स्तर पर पहुंचा दिया। शिशुओं को पोलियो पहले भी होता था लेकिन मां के दूध से मिल रही रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता के कारण उसके बहुत ही कम लक्षण प्रकट होते थे। शिशु बीमार पड़ने की जगह रोग के प्रति प्रतिरोध क्षमता विकसित कर लेते थे। सीवर प्रणाली की प्रगति के साथ-साथ अमेरिकी घर और समुदाय अधिक साफसुथरे हुए तो शिशु पोलियो वायरस के सम्पर्क में न आने के कारण रोग के प्रति प्रतिरोध क्षमता विकसित नहीं कर पाए। इस स्थिति में, मां का दूध पीना बंद करने के बाद पोलियो वायरस के संपर्क में आने पर उनके रोगी होने की संभावना बहुत बढ़ जाती थी।

वैसे तो पोलियो से पीड़ित लोगों में से एक प्रतिशत को ही लकवा होता है लेकिन जो सुरक्षित बच निकलते हैं, वे बाद में भी काफी कष्ट पाते हैं। आज अमेरिका में पोलियो से सुरक्षित बच निकलने वाले करीब 70 प्रतिशत लोग मांसपेशियों की कमजोरी से पीड़ित हैं, उम्र बढ़ने के साथ-साथ उन्हें थकान, दर्द, निगलने और सांस लेने में दिक्कत जैसी परेशानियां सता सकती हैं।

तसल्ली बस इस बात की है कि पोलियो का सामना करने वाली यह आखिरी अमेरिकी पीढ़ी है।

एफ.डी.आर. लाइब्रेरी © ए.पी. इमेज्ज़ ऐलेक्स मैकेंज़ी

राष्ट्रपति फ्रैंक्लिन रूज़वेल्ट बचपन में पोलियो के शिकार हो गए थे। उन्होंने वैसाखियों और व्हीलचैयर का इस्तेमाल किया लेकिन सार्वजनिक तौर पर उन्हें इनका इस्तेमाल करते हुए शायद ही कोई फोटो लिया गया हो। यहां वह न्यू यॉर्क में अपने घर में अपने कुत्ते फाला और केयरटेकर की पोती रूथी बी के साथ नज़र आ रहे हैं।

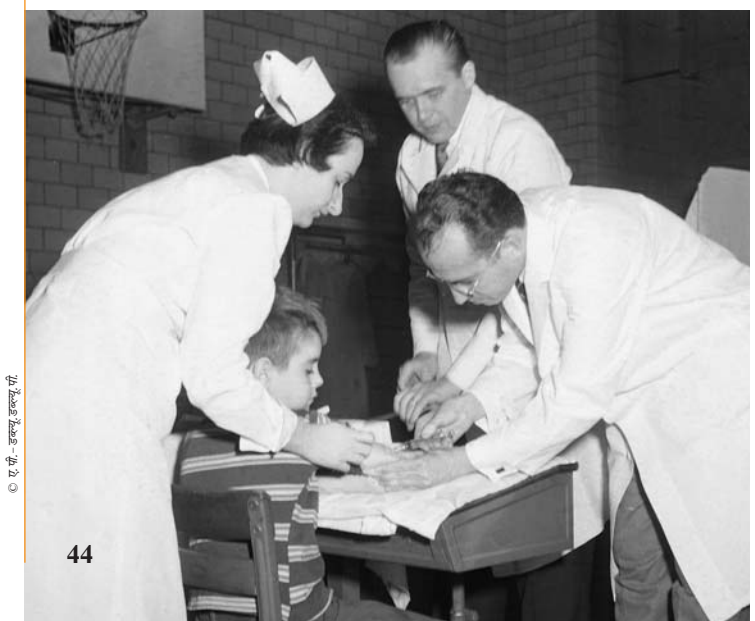

© यू.पी.-इमेज्ज़ एज्यू.

पोलियो टीके की खोज करने वाले डॉ. जोनास साक 1954 में पिट्सबर्ग, पेंसिल्वैनिया में पायलट परीक्षण के दौरान एक स्कूली बच्चे को वैक्सीन का इंजेक्शन लगाते हुए।